हेमिंग्वे का प्रभाव

अखिल शर्मा

एक भारतीय अमेरिकी लेखक की चेतना और शिल्प को किस तरह अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने आकार दिया।

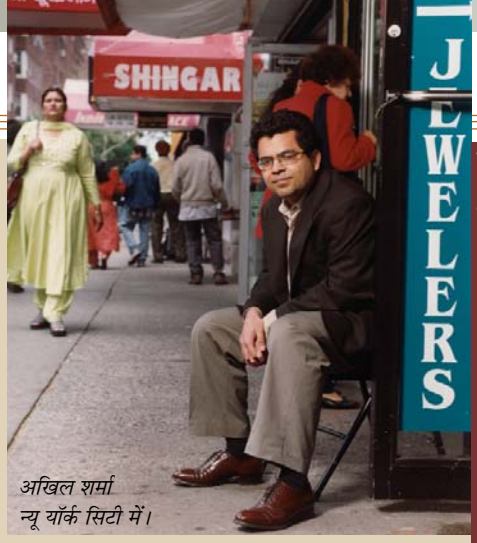

एडिया आइजर्ड

अखिल शर्मा न्यू यॉर्क सिटी में।

मैं सिर्फ अपने अनुभव की बात कहूंगा जिसे किसी भी तरह सभी भारतीय अमेरिकी लेखकों पर लागू होने वाला नहीं मान लेना चाहिए।

मैंने कहानियां नवीं कक्षा में लिखनी शुरू कीं। और इनके पीछे कारण यह था कि मैं बहुत खिन्न था और सबका ध्यान आकर्षित करना चाहता था।

मेरा परिवार जिस में मैं, मेरा भाई, मां और पिता थे, 1979 में भारत से अमेरिका आया। हमें यहां आए दो बरस ही हुए थे कि मेरे भाई के साथ स्विमिंग पूल में दुर्घटना हुई, उसका मस्तिष्क बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। तब मैं 10 बरस का था, मेरा भाई 14 बरस का।

मेरा भाई आज भी बोल और चल नहीं सकता। अनूप... मुंह से खाना नहीं खा सकता, इसलिए एक नली से सीधे उसकी आंतों में आहार पहुंचाया जाता है। वह खुद करवट नहीं ले सकता, इसलिए कोई रातभर उसके साथ बना रहता है ताकि उसे हर दो घंटे में करवट दिलवा सकें और यूं उसे बिस्तर पर लेटे रहने से होने वाले घावों से बचाया जा सके।

दुर्घटना के बाद दो बरस तक मेरा भाई अस्पताल में रहा। फिर मेरे माता-पिता ने फैसला किया कि वह उसकी देखभाल खुद करेंगे... जब में बड़ा हो रहा था तो भाई की हालत की चिंता के अलावा मुझे पैसे की चिन्ता भी रहती थी। हमारे पास पैसा बहुत कम था, और हम बीमा कम्पनियों और नर्सों पर निर्भर थे, इसलिए हमें लगता था कि हमें लगातार धोखा दिया जाता है, कि लोग अपनी जिम्मेदारियां नहीं निभाते।

15 बरस होने तक मैं कहानियां बस तभी लिखता था जब कक्षा में कहानी लिखने को कहा जाता था। नवीं कक्षा में पढ़ते हुए हमारी अध्यापिका श्रीमती ग्रीन मेरी तारीफ करती थीं कि मैं पढ़ने के लिए दी गई चीजों को कितनी अच्छी तरह समझ लेता हूं। उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए मैं कहानियां लिखने लगा।

शुरू में मेरी सभी कहानियां के चरित्र श्वेत अमेरिकी हुआ करते थे। मुझे लगता है कि कुछ हद तक इसका कारण यह था कि मैं जो कथा साहित्य पढ़ता था, वह श्वेत लोगों के ही बारे में होता था। इतनी ही महत्वपूर्ण यह बात थी कि मुझे लगता था कि भारतीय अमेरिकी होने का अनुभव महत्वपूर्ण नहीं है। बहुसंख्यक समुदाय के अनुभवों से परे मैं अल्पसंख्यक समुदाय में था, और मुझे लगता था कि मेरे अनुभव क्योंकि बहुसंख्यक वर्ग के अनुभव नहीं हैं, इसलिए ये श्वेत लोगों के अनुभव जितने महत्वपूर्ण नहीं हैं। यहां तक कि मुझे ऐसा भी लगता था कि मेरे अनुभव शायद श्वेत अमेरिकियों के अनुभवों जितने वास्तविक नहीं हैं।

श्वेत लोगों के बारे में लिखने में एक समस्या तो यही थी कि मैं 10वीं कक्षा में पहुंचने तक कभी किसी श्वेत व्यक्ति के घर में गया तक नहीं था।

10वीं में पढ़ते हुए मैंने अर्नेस्ट हेमिंग्वे की जीवनी पढ़ी। मुझे याद है वह सुबह का समय था, रसोई की खिड़कियां अंधेरी थीं। मैं हेमिंग्वे की जीवनी इसलिए पढ़ रहा था क्योंकि मैं लोगों से झूठ बोलना चाहता था कि मैंने हेमिंग्वे की किताबें पढ़ी हैं (उन दिनों मैं काफी झूठ बोलता और उन किताबों को पढ़ने के दावे करता रहता था जो मैंने नहीं पढ़ी होती थीं)।

खैर, अर्नेस्ट हेमिंग्वे की जीवनी पढ़कर मैं चकित रह गया। चकित होने की बात यह थी कि अर्नेस्ट हेमिंग्वे को फ्रांस और स्पेन में रहने का मौका मिला था, वह क्यूबा भी गए थे और लगता था कि मज़े की जिंदगी जीते रहे थे। तब तक मैं सोचता था कि मैं कम्प्यूटर प्रोग्रामर या इंजीनियर या डॉक्टर बनूंगा। लेकिन इस किताब को पढ़ने के बाद मुझे अचानक लगा कि मैं भी हेमिंग्वे की तरह ऐसा जीवन जियूं जिसमें उबाऊपन न हो।

अखिल शर्मा की किताब ***एन ओबिडिएंट फ़ादर*** *नई दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई और मुंबई के अमेरिकी पुस्तकालयों में उपलब्ध है।*

जीवनी के बाद मैंने हेमिंग्वे के बारे में और किताबें पढ़नी शुरू कीं- जीवनियां और समीक्षात्मक निबन्ध। हेमिंग्वे की लिखी कोई किताब पढ़ने से पहले मैंने उनके और उनकी रचनाओं के बारे में करीब 20 किताबें तो पढ़ी ही होंगी। और मैंने यह सब इसलिए पढ़ी क्योंकि मैं जो भी उन्होंने किया, वह सब करना सीखना चाहता था।

मैं मानता हूं कि हेमिंग्वे वह लेखक हैं जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। उन्होंने उन चरित्रों के बारे में लिखा जिनके अनुभव अमेरिकियों के लिए तो अजब-गजब ही थे। उन्होंने इटली के अपराधियों और सिपाहियों और पेरिस के पत्रकारों के बारे में लिखा। हेमिंग्वे से बाकी चीजों के अलावा मैंने जो सीखा, और मैं कह सकता हूं कि लेखक के तौर पर मेरा ध्रुव हेमिंग्वे ही हैं, वह यह है कि अजब-गजब चीजों के बारे में उनकी अजब-गजब शैली से आतंकित हुए बिना कैसे लिखा जाए। हेमिंग्वे का विश्लेषण करने वाले अध्येताओं ने बताया है कि उनकी कहानियों की शुरुआत एक्शन के बीच से होती है, वह यूं लिखते हैं जैसे पाठक घटनाक्रम और वातावरण से परिचित हैं; कि जब वह सीधे स्पष्टीकरण देते हैं तो यह पाठक को यह बताने का उनका तरीका होता है कि मैं कहानी की परिपाटी इसलिए तोड़ रहा हूं कि मैं तुम से झूठ नहीं बोलना चाहता।

लेखन बस शब्दों की एक माला है, तरकीबों की एक श्रृंखला जो पाठक में अनुभव पैदा करती है। मुझे हमेशा से लगता है कि जैसे शल्यचिकित्सक की जाति से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि रोगी की जाति जो भी हो हृदय, हृदय ही रहता है और पित्ताशय, पित्ताशय उसी तरह लेखक की जाति का भी कोई खास महत्व नहीं है।

मैं आव्रजन की एक बड़ी लहर के हिस्से के रूप में अमेरिका आया था। एशियाई आव्रजकों की इस लहर ने अमेरिकी समाज में एशियाई परिवार के जीवन के बारे में जानने की उत्सुकता जगाई, इसलिए मैं सौभाग्यशाली हूं कि मेरी किताबें पढ़ी गईं (मैं खुद को अच्छा लेखक मानता हूं लेकिन मैं कल्पना कर सकता हूं कि अगर मैं 50 बरस पहले लिख रहा होता तो मेरा लेखन इतना अजब-गजब और हाशिए पर होता कि औसत पाठक तो उसे नहीं पढ़ते)।

मेरी पहली किताब *एन ओबीडिएंट फादर* को 2000 में किसी भी वर्ष में (लेखक की पहली) सर्वश्रेष्ठ कृति को मिलनेवाला पीईएन/ हेमिंग्वे प्राइज़ मिला।

मुझे पुरस्कार हेमिंग्वे के बेटे... के हाथों मिला। मैं और यह धवलकेश सज्जन 10-15 मिनट सभाकक्ष में बैठे बातें करते रहे। संकोच के मारे मैंने उन्हें बताया नहीं कि उनके पिता मेरे लिए कितने महत्वपूर्ण थे। इसके बजाय हम इस बारे में बात करते रहे कि हेमिंग्वे ने अपनी कृतियों के शीर्षक *द बुक ऑफ़ कॉमन प्रेयर* से लिए।

कई बार यह सोचते हुए कि मैं कितना भाग्यशाली हूं, मेरा मन रोने को करता है।

अखिल शर्मा *द न्यू यॉर्कर और द अटलांटिक मंथली के लिए लिखते हैं। ग्रांटा पत्रिका ने 2007 में उन्हें श्रेष्ठ युवा अमेरिकी उपन्यासकार सूची में रखा। उनका जन्म नई दिल्ली में हुआ।*

ज़्यादा जानकारी के लिए:

अखिल शर्मा की पुस्तक *मदर एंड सन* के कुछ अंश

http://www.bestyoungnovelists.com/Akhil-Sharma/Read-an-extract-from-Mother-and-Son

अर्नेस्ट हेमिंग्वे

http://www.timelesshemingway.com/